IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तरी–पूर्वी छत्तीसगढ़ में "पहाड़ी कोरवा" आदिम जनजाति की समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. शिवनाथ एक्का 'पूर्व शोधार्थी'

भूगोल अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोध–सारांश :

आदिम जनजाति की सुदृढ़ता एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत समृद्ध समाज की पहचान होती है। समाज में आदिम जनजाति की स्थिति जितनी मजबूत होगी, समाज उतना ही विकसित तथा प्रभावपूर्ण होगा। अतः भारतीय सामाजिक परिवेश में आदिम जनजाति समुदाय का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उच्च पर्वतीय तथा पहाड़ी क्षेत्र में अशिक्षा, गरीबी, निम्न सामाजिक–आर्थिक दशा, निम्न आवासीय दशा, निम्न पोषण एवं स्वास्थ्य दशाओं ने न सिर्फ पहाड़ी कोरवा समुदाय को प्रभावित किया, अपितु उन्हें अविकसित भी बना दिया। परिणामतः आज भी पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय जल, जंगल, जमीन, स्वास्थ्य तथा शिक्षा हेतु निरंतर प्रयासरत् हैं। भौगोलिक उच्चावच एवं जलवायु का प्रभाव क्षेत्र के पहाड़ी कोरवा जनजाति परिवारों में स्पष्ट दृष्टव्य है, जो पिछड़ेपन हेतु उत्तरदायी है। प्रदेश का उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र जो पहाड़ी कोरवा समुदाय का निवास स्थल है, उच्च पर्वतीय तथा पठारी क्षेत्र की अधिकता तथा विषम धरातलीय स्वरूप के साथ–साथ घने वनों से आच्छादित क्षेत्र होने के कारण जंगली सुवरों तथा हाथियों का प्रकोप ज्यादा है।

पहाड़ी करने में कोरवा जनजाति समुदाय का जीवन खाद्य संग्रहण करने में व्यतीत होता है इसलिए स्वयं अपनी समुचित देखभाल नहीं कर पाते हैं। इसके लिए सरकार तथा स्वयं सेवी संगठन को आगे आकर आवश्यक पहल करनी होगी। प्रदेश के सर्वेक्षित पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति बाहुल्य ग्रामों के परिवारों में (0–6 आयु वर्ग को छोड़कर) मात्र 31. 93 प्रतिशत् जनसंख्या साक्षर हैं। आदिम जनजाति परिवारों में शिक्षा व जागरुकता की कमी के कारण बाल विवाह की प्रथा आज भी प्रचलित है। इनकी अर्थव्यवस्था जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था है, जिसमें बाजार अर्थव्यवस्था का सीमित अंश है। इसी संदर्भ में स्वास्थ्य केन्द्र के दूर होने के कारण आने–जाने की समस्या होती है। शासन द्वारा स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं को कृषकों तक प्रसारित करने के लिए शिविर लगाए जाएं तथा स्वास्थ्य परीक्षण भी समय–समय में पंचायत स्तर पर किया जाना आदिम जनजातीय कृषकों के स्वास्थ्य स्तर के उन्नयन हेतु महत्वपूर्ण होंगे साथ ही हर्बल दवा बनाने के लिए शासन स्तर पर स्थानीय पहाड़ी कोरवा समुदाय को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए ताकि रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके।

शब्द कुन्जी : *सामाजिक दशा, आर्थिक दशा, आवासीय दशा, पोषण एवं स्वास्थ्य दशा।*

प्रस्तावना :

आदिम जनजाति की सुदृढ़ता एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत समृद्ध समाज की पहचान होती है। समाज में आदिम जनजाति की स्थिति जितनी मजबूत होगी, समाज उतना ही विकसित तथा प्रभावपूर्ण होगा क्योंकि विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय अनुसूचित जनजाति समाज की आधी जनशक्ति होती है। अतः भारतीय सामाजिक परिवेश में आदिम जनजाति समुदाय का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उच्च पर्वतीय तथा पहारी क्षेत्र में अशिक्षा, गरीबी, निम्न सामाजिक–आर्थिक दशा, निम्न आवासीय दशा, निम्न पोषण एवं स्वास्थ्य दशाओं ने न सिर्फ पहाड़ी कोरवा समुदाय को प्रभावित किया, अपितु उन्हें अविकसित भी बना दिया। परिणामतः आज भी पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय जल, जंगल, जमीन, स्वास्थ्य तथा शिक्षा हेतु निरंतर प्रयासरत् हैं। इनके समक्ष विभिन्न प्रकार की समस्याएं उभरकर आई जिनका निराकरण करना अति आवश्यक है।

पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय को शासन ने विशेष पिछड़ी जनजातियों की श्रेणी में शामिल किया है। अतः प्रदेश के समस्त विशेष पिछड़ी जनजातियों के समान ही पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति है। भौगोलिक उच्चावच एवं जलवायु का प्रभाव क्षेत्र के पहाड़ी कोरवा जनजाति परिवारों में स्पष्ट दृष्टव्य है, जो पिछड़ेपन हेतु उत्तरदायी है। प्रदेश का उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र जो पहाड़ी कोरवा समुदाय का निवास स्थल है, उच्च पर्वतीय तथा पठारी क्षेत्र की अधिकता तथा विषम धरातलीय स्वरूप के साथ–साथ घने वनों से आच्छादित क्षेत्र भी है। प्रदेश में कृषि योग्य भूमि की कमी एवं पठारी क्षेत्र की अधिकता से भूमि अत्यन्त अनुपजाऊ है, वहीं कृषि हेतु मानसून पर निर्भर रहना पड़ता है। घने वनों से आच्छादित क्षेत्र होने के कारण इनके फसलों को जंगली जानवरों विशेषकर जंगली सुवरों तथा जंगली हाथियों का प्रकोप ज्यादा है। फलस्वरूप क्षेत्र में यातायात एवं संचार सुविधाओं का विस्तार किया जाना विकास की अनिवार्य शर्तों में से एक है।

अध्ययन क्षेत्र :

उत्तरी–पूर्वी छत्तीसगढ़ में रायगढ़, जशपुर, सरगुजा एवं बलरामपुर जिला $24^0 30'$ से $21^0 00'$ उत्तरी अक्षांश एवं $82^0 30'$ से $84^0 30'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 23209.01 वर्ग कि.मी. है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण वर्ष 2005–06 के अनुसार पहाड़ी कोरवा जनजाति की कुल जनसंख्या 28,164 है, जो कि राज्य के जनसंख्या का 0. 11 प्रतिशत है और राज्य के जनजातियों की कुल जनसंख्या का 0.36 प्रतिशत है एवं उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 1.2 प्रतिशत है। प्रदेश के उत्तरी क्षेत्र, पूर्वी बघेलखण्ड का पठार तथा उत्तरी पाट एवं पठार प्रदेश में पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति निवासरत् है। उत्तरी–पूर्वी छत्तीसगढ़ की भौतिक पृष्ठभूमि का सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। धरातलीय बनावट की दृष्टि से क्षेत्र उच्च भू–भाग, पठार एवं मैदानों से युक्त है, जहाँ पश्चिमी छोटा नागपुर पठार का विस्तार है। अध्ययन क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी देवगढ़ की पहाड़ियाँ (विंध्य श्रेणी) है, जो समुद्र सतह से 1370 मीटर ऊँची है। अध्ययन क्षेत्र का धरातलीय स्वरूप उच्चभूमि के रूप में है, जिसे पाट (जशपुर पाट, सामरी पाट, मैनपाट, पण्ड्रापाट, जारंगपाट, एवं जमीर पाट) के नाम से जाना जाता है, जिसमें सर्वाधिक ऊँचाई ''सामरी पाट'' (गौरलाटा 1225 मीटर) है, जो बलरामपुर जिले के कुसमी तहसील में स्थित है। क्षेत्र में उच्च एवं निम्न गोंडवाना क्रम की चट्टानें प्राप्त हुई, वहीं आर्कियन्स शैल समूह का सर्वाधिक विस्तार प्राप्त है।

प्रदेश में दो अपवाह प्रणाली (गंगा अपवाह तंत्र एवं महानदी अपवाह तंत्र) पायी गई है, जो ढाल के अनुरूप वृक्षाकार अपवाह तंत्र का निर्माण करती है, जिसके निर्धारण में क्षेत्र की भौतिक बनावट एवं उच्चावच का गहरा प्रभाव दृष्टव्य है। अध्ययन क्षेत्र में वन जहाँ निवासरत् मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं में महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर औषधियों का भण्डार भी है। क्षेत्र में पाये जाने वाली मिट्टियों पर उच्चावच एवं भौतिक चट्टानों का प्रभाव अधिक है। अतः क्षेत्र में उपजाऊ मिट्टी अपेक्षाकृत कम पायी गई है। प्रदेश की जलवायु 'मानसूनी' प्रकार की है, वहीं क्षेत्र के कुसमी तहसील में सर्वाधिक वर्षा होती है।

उद्देश्य :

1. पहाडी कोरवा आदिम जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, आवासीय, पोषण एवं स्वास्थ्य समस्याओं का परिकलन करना।

2. आदिम जनजाति में विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित निराकरण हेतु नियोजन प्रस्तुत करना।

विधि तंत्र :

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु उत्तरी–पूर्वी छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा बाहुल्य जिलों (रायगढ़, जशपुर, सरगुजा व बलरामपुर) से कुल 20 ग्रामों का चयन उद्देश्यपूर्ण पद्धति द्वारा अनुसूची के माध्यम से 1218 परिवारों में सामाजिक, आर्थिक, आवासीय, पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिक आंकड़े संकलन कर सूचनाओं के आधार पर विश्लेषित है। प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन से सम्बन्धित आधारभूत प्राथमिक आँकड़ों का संकलन कृषक परिवारों से प्रत्यक्ष अवलोकन, साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से व्यक्तिगत् सर्वेक्षण द्वारा किया गया।

सामाजिक समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ :

पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय स्वतंत्र प्रवृत्ति के होते हैं. व ग्राम से पृथक पारा/टोलों के रूप में रहना पसंद करते हैं। परिणामतः संगठित समाज के लाभ से वंछित रह जाते हैं तथा आधुनिकता को ग्रहण करने से कतराते हैं तथा इसे वे अपने स्वाभिमान के खिलाफ समझते हैं। समुदाय को एकांत व एकाकी जीवन व्यतीत करना पसंद है तथा इसी में अपने आप को संतुष्ट व सुरक्षित महसूस करते हैं। इनकी सामाजिक रीति–रिवाज व प्रचालित प्रथाएं अभी भी रूढ़िवादी व अंधविश्वास से परिपूर्ण है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके सामाजिक विकास पर पड़ता है।

पहाड़ी कोरवा समुदाय हड़िया नामक मादक पदार्थ का का बहुतायत सेवन करते हैं। हड़िया का निमार्ण चावल, कुटकी एवं बाजरा आदि अनाजों से होता है। इसके प्रति समुदाय का लगाव इतना है, कि यदि घरों में खाने के लिए अनाज न हो तब भी हड़िया बनाकर पीते हैं। रोचक तथ्य यह है, कि परिवार के सभी सदस्यों (बूढ़ो से बच्चों) को बराबर पीने के लिए दिया जाता है। यह इनके सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में एक महत्वपूर्ण पेय पदार्थ है जिसके बिना किसी कार्य का सम्पादन संभव नहीं हो सकता। इसके अलावा महुआ के फूल को सुखाकर शराब निर्मित कर सेवन किया जाता है। इसके अत्यधिक सेवन से स्वयं समस्याओं को आमंत्रण कर बैठता है। अतः इसके दुष्परिणामों के बारे में बताना आवश्यक है, जिससे इनकी दृष्टिकोण में बदलाव आ सके।

अध्ययन क्षेत्र के पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की दूसरी सबसे बड़ी समस्या उनकी निम्न शैक्षणिक स्थिति है, क्योंकि शिक्षा सामाजिक विकास के लिए आवश्यक घटक है। शिक्षा के बिना सामाजिक आर्थिक एवं वैज्ञानिक विचारधारा का विकास संभव नहीं है। प्रदेश के सर्वेक्षित पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति बाहुल्य ग्रामों के परिवारों में (0–6 आयु वर्ग को छोड़कर) मात्र 31.93 प्रतिशत् जनसंख्या साक्षर हैं, वहीं सर्वाधिक 68.07 प्रतिशत् जनसंख्या निरक्षर हैं। अर्थात शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं हैं तथा शिक्षा के महत्व से आज भी अनभिज्ञ हैं। क्षेत्र में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में साक्षरता दर अधिक पाई, जो समाज में व्याप्त रुढ़िवादी विचारधारा को प्रदर्शित करता है।

आदिम जनजाति परिवारों में शिक्षा की कमी के कारण शासन द्वारा क्रियान्वित कल्याण विकास योजना का लाभ लेने से वंछित हो रहे हैं। अतः शिक्षा की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है, जिसे ग्राम स्तर पर जागरूकता लाना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के प्रचार–प्रसार के द्वारा ही पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय को विकास प्रक्रिया में भागीदारी बनाया जा सकता है।

इसी प्रकार प्रदेश के पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की वैवाहिक संरचना में लिंग भेद का प्रभाव अधिक रहा है, जो समाज में परम्परागत् विचार एवं संकीर्ण मानसिकता को प्रदर्शित करता है। आदिम जनजाति परिवारों में शिक्षा व जागरुकता की कमी के कारण बाल विवाह की प्रथा आज भी प्रचलित है, जहाँ वयस्क होने से पहले ही विवाह तय कर दिये जाते हैं। विवाह तय करते समय बालिका की आयु 8 से 12 वर्ष व बालकों की आयु 12 से 16 वर्ष के मध्य होती है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि इनमें सर्वाधिक 73.33 प्रतिशत् जनसंख्या का विवाह 16 वर्ष से कम आयु में हुआ है। क्षेत्र के पहाड़ी कोरवा परिवारों में पुरूषों (52.15%) की अपेक्षा (94.44%) महिलाओ में 16 वर्ष से कम आयु में विवाह का प्रतिशत् अधिक रहा। महिलाओं के समकक्ष कम उम्र में विवाह होने के कारण शीघ्र मां बनने की प्रवृत्ति तथा उच्च जन्मदर जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याएँ हैं, जो महिलाओं को न केवल शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमजोर बनाती है, अपितु उनकी कार्यक्षमता को कम करती है। पहाड़ी कोरवा समुदाय में विवाह के पश्चात् तलाक लेने की प्रक्रिया अत्यन्त सरल होने के कारण इसकी पुनरावृत्ति अन्य पड़ोसी जातियों की तुलना में अधिक में पाई गई, वहीं बहु पत्नी प्रथा को सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप स्वीकारने से सामाजिक असंतुलन की स्थिति निर्मित होती है। अतः शासन स्तर पर बाल विवाह के रोकथाम हेतु उचित कदम उठाना होगा। इसके दुष्परिणामों के बारे में बताना आवश्यक है साथ ही इनमें सामाजिक जागरूकता की भी आवश्यकता है।

आर्थिक समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ :

पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति आर्थिक दृष्टि अत्यंत पिछड़ी हुई है। इनकी अर्थव्यवस्था जीवन निर्वाह अर्थव्यवस्था है, जिसमें बजार अर्थव्यवस्था का सीमित अंश है। समुदाय के लोगों में भौतिक वस्तुओं के प्रति आकर्षण कम होने का मुख्य कारण गरीबी है, क्योंकि सर्वेक्षित ग्रामों में निवास करने वाले सभी पहाड़ी कोरवा परिवार कृषि से जुड़े हैं तथा आज भी कृषि परम्परागत् पद्धति से की जाती है, चूँकि पहाड़ी कोरवा जनजातियों का निवास भी इन्हीं क्षेत्रों में है, जिसमें 44.17 प्रतिशत् पहाड़ी कोरवा परिवार भूमिहीन तथा 34.07 प्रतिशत् परिवार सीमांत कृषक वर्ग के अन्तर्गत् प्राप्त हुए हैं। पहाड़ी कोरवा समुदाय द्वारा अच्छे बीजों व उचित मात्रा में खाद का प्रयोग नहीं किया जाता है। फलस्वरूप उत्पादित फसल की मात्रा भी कम होती है।

पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की आर्थिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण कारण उनकी भू–धारण की स्थिति है। भू–धारण का छोटा आकार, उर्वराहीन भूमि तथा कृषि आदानों का अभाव आदि कारणों से अभी भी कृषि व्यवसाय पहाड़ी कोरवाओं के मुख्य व्यवसाय के रूप में स्थापित नहीं हो सका है। तथापि कृषि क्षेत्र में पहले की तुलना में काफी वृद्धि अवश्य हुई है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि पर स्वामित्व पहाड़ी कोरवा समुदाय की महत्वपूर्ण समस्या रही है। प्रारंभ में इनके द्वारा जंगलों की सफाई कर झूमिंग कृषि करते थे, जो अधिकांशतः वन भूमि है, जिसे अब इनकी पड़ोसी जातियों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया है। इन भूमियों की पुनः वापसी शासन स्तर पर किया जाना अनिवार्य है। दूसरी ओर ये अशिक्षा तथा अज्ञानतावश शासन के विकास संबंधी विशेष प्रयास के बाद भी विकास के स्वाभाविक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके हैं, जबकि इन विकास कार्यक्रमों का लाभ अन्य समुदाय द्वारा उठाया जाता है। शासकीय स्तर पर भूमिहीन पहाड़ी कोरवा परिवारों को अविलंब कृषिभूमि आबंटित किया जाए। इसके अलावा वर्षों से काबिज कृषि अथवा वनभूमि का पट्टा वितरित किया जाए। सिंचाई साधनों का वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि ये पूरी तरह माानसून पर निर्भर न रहे, वहीं कृषि विभाग के कर्मचारियों को इस अंचल में भ्रमण कर समय–समय पर शिविर आयोजन कर मार्गदर्शन दिये जाने की आवश्यकता है।

पहाड़ी कोरवा जनजाति परिवार दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में निवास करते हैं, जिसके कारण सभ्य समाज से जुड़ नहीं पाते हैं। भौगोलिक विषमता के कारण यातायात अधोसंरचना का अभाव दृष्टव्य है। वन सम्पदा इनकी अजीविका का प्रमुख स्रोतों में से एक है, जिनसे इन्हें खाद्य पदार्थ, उपभोग की वस्तुएँ तथा आर्थिक मूल्य के संसाधन प्राप्त होते हैं। इसके अन्तर्गत् समुदाय द्वारा वनों से मुख्यतः महुआ, साल बीज, चार/चिरौंजी, आम, हर्रा, बहेरा, आँवला, इमली, धूप, शहद एवं तेंदूपत्ता तथा कई प्रकार की फल–पत्तियाँ व औषधीय गुणों के पौधों का संग्रहण किया जाता है। लेकिन अज्ञानतावश ये इनका मौद्रिक मूल्य का आंकलन नहीं कर पाते हैं, वहीं बाजार मूल्य से भी अनभिज्ञ होने के कारण इन्हें वास्तविक लाभ नहीं मिल पाता है। वर्तमान समय में पंचायत स्तर पर शासन द्वारा नियुक्त प्रबंधक विद्यमान हैं। इनके द्वारा वनोपज की उचित मूल्य दर दीवारों या बैनर के माध्यम से चस्पा किया जाना चाहिए साथ ही विभिन्न स्तर के बिचौलियों से बचने हेतु समुदाय को जागरूक करना चाहिए, जिससे उन्हें अपेक्षित लाभ मिल सके तथा लघु वनोपज सहकारी समिति केन्द्रों से इस समुदाय के लोगों के वनोपज के मूल्यों का भुगतान तत्काल व पूर्ण देने की व्यवस्था की जाए।

वर्तमान में पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार गैर कृषि स्रोतों से प्राप्त आय है, जिसे वे सबसे अधिक प्राथमिकता देते हैं। गैर कृषि स्रोत के रूप में मुख्यतः मजदूरी, मनरेगा कार्य, शासकीय सेवा एवं अन्य कार्यों से जीविकोपार्जन हेतु आय की प्राप्ति होती है। अध्ययन क्षेत्र में मजदूरी से प्राप्त औसत वार्षिक आय सर्वाधिक 2863.90 रुपये सरगुजा जिले के लालमाटी ग्राम में प्राप्त हुई। समुदाय में प्रचलित सीमित व्यवसायों में कृषि व वनोपत्र एकत्रीकरण के बाद सबसे बड़ा अर्थोपार्जन का स्रोत मजदूरी करना है, क्योंकि अभी भी 44.17 प्रतिशत् पहाड़ी कोरवा परिवारों के पास भू–स्वामित्व नहीं है, वहीं जिन परिवारों के पास भू–स्वामित्व है उसकी मात्रा भी कम है। मजदूरी के क्षेत्र में व्याप्त अनियमितता की स्थिति को अनुभव किया जा सकता है। चाहे वह मजदूरी दर के संबंध में हो या कार्य समय व प्रकृति के संबंध में हो। सरकारी क्षेत्र में वर्ष भर कार्य की उपलब्धता नहीं होने के कारण निजी क्षेत्रों में मजदूरी कार्य करने के लिए मजबूर हैं। इन मजदूरी कार्य में इनका स्थानीय लोगों द्वारा शोषण किया जाता है, वहीं शासकीय क्षेत्र में मजदूरी दर से

लोग संतुष्टि व्यक्त करते हैं, लेकिन इसका भुगतान में विलम्ब होने के कारण मजदूरी करने में असमर्थता व्यक्त करते हैं क्योंकि इन्हें मजदूरी राशि की तत्काल आवश्यकता होती है।

शासन की मजदूरी नीति को तत्काल इस क्षेत्र में प्रभावशालीपूर्ण लागू किया जाए साथ ही समय–समय पर परिवर्तित मजदूरी दर की सूचना इन्हें उचित माध्यम से दी जानी चाहिए। समय–समय पर श्रम निरीक्षकों व अन्य अधिकारियों के दौरे आयोजन किये जाएँ ताकि इन्हें मिलनी वाली मजदूरी दर की जांच हो सके। सरकारी क्षेत्र में इन्हें मजदूरी का भुगतान सप्ताहिक या पाक्षिक करने के स्थान पर प्रतिदिन करनी चाहिए ताकि इनकी तत्कालीन आवश्यकता की पूर्ति हो सके तथा ये रूची पूर्वक कार्य कर सके।

आवासीय समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ :

आवास का मानवीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है तथा मानव की शरणास्थली होने के साथ ही मानसिक शांति एवं शारीरिक थकान दूर करने का भी स्थल है। अतः परिवार की आवासीय दशा उनकी आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर पर निर्भर करती है। प्राचीनकाल में पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति अति पिछड़ी होने के कारण घूमंतू जीवन व्यतीत करते थे तथा वर्तमान में भी कहीं–कहीं छोटी बस्तियों या टोलों के रूप में इन्हें देखा जा सकता है। पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की आर्थिक स्थिति निम्न होने के कारण ये सुविधायुक्त आवास का निर्माण नहीं कर पाते हैं एवं स्थानीय संसाधनों जैसे– घास–फूस, लकड़ी, खप्पर तथा मिट्टी आदि का प्रयोग कर आवास निर्माण करते हैं।

पहाड़ी कोरवा जनजाति के अंधविश्वासी प्रवृत्ति के होते हैं। अतः यदि किसी पहाड़ी कोरवा परिवार के अपने किसी सदस्य की मृत्यु बुरी आत्मा के प्रकोप से होने की आशंका हो, तो वह परिवार उस आवास को तोड़कर अन्यत्र निवास करने लगते हैं। अध्ययन क्षेत्र के सर्वेक्षित पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों के मकानों में से सर्वाधिक 93.84 प्रतिशत् मकान कच्चा है। वर्षाकाल में इन मकानों की छतों से पानी टपकना, घर के आसपास पानी का जमाव अस्वच्छता तथा गंदगी का फैलाव पाया जाता है। क्षेत्र में कच्चे मकान में निवास करने वाले पहाड़ी कोरवा परिवारों का शत्–प्रतिशत आमानारा, गणेशपुर, पुसाउडेरा, लरंगापाट, लोढ़ेनापाट, चलनी, छिछली 'अ', कामारिमा, भेड़िया, लाऊ, सेवारी, बंटीडॉड़ एवं पतरापारा ग्रामों में दृष्टव्य हुई, वहीं सर्वेक्षित सभी पहाड़ी कोरवा परिवारों के मकानों की छतें खपरैल से निर्मित हैं तथा शत–प्रतिशत् परिवारों के मकानों में फर्श मिट्टी के हैं।

पहाड़ी कोरवा की आवासीय दशा का निर्धारक कारकों में कमरों की संख्या विशेष महत्व रखती है। कमरों की संख्या के आधार पर किसी परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति को मापा जा सकता है, किन्तु अध्ययन क्षेत्र के आदिम जनजाति परिवारों में 70.20 प्रतिशत् परिवारों के मकानों में कमरों की संख्या एक है। जोत आकार के अनुसार एक कमरे के मकान जहाँ भूमिहीन पहाड़ी कोरवा कृषक परिवारों में शत्–प्रतिशत् टेढ़ासेमर एवं लोढ़ेनापाट ग्राम में प्राप्त हुआ, वहीं 61.08 प्रतिशत् परिवार भी विद्युत की सुविधाओं से वंचित हैं तथा सीमित कमरों की संख्या के कारण पृथक रसोई घर का अभाव दृष्टव्य है, जिसका प्रभाव परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक रूप से पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में नदी/नाला, कुआ/ढोढ़ी तथा हैण्डपम्प पेयजल के प्रमुख साधन हैं। कई पहाड़ी कोरवा ग्राम ऐसे हैं जहाँ पर्वतीय एवं पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण पहुँच अत्यन्त कठिन है ऐसे क्षेत्रों में पेयजल का प्रमुख स्रोत नदी/नाला एवं कुआं/ढोढ़ी है। अध्ययन क्षेत्र के कुल सर्वेक्षित पहाड़ी कोरवा परिवारों में 26.52 प्रतिशत् पेयजल के रूप में नदी नालों का उपयोग करते हैं। नहीं। नदी/नालों के जल का शत्–प्रतिशत् उपभोग टेढ़ासेमर एवं चुहीपहाड़ ग्राम के पहाड़ी कोरवा परिवारों में किया जाता है, वहीं निम्न आर्थिक स्थिति के कारण अध्ययन क्षेत्र के 99.51 प्रतिशत् परिवारों में स्नानगृह की सुविधा का अभाव है।

अध्ययन क्षेत्र के सर्वेक्षित कुल पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों में से 90.48 प्रतिशत् परिवार शौचालय की सुविधा से वंचित है तथा शौच हेतु आज भी खुले में जाने को मजबूर हैं। आदिम जनजाति परिवारों के सभी मकानों में गंदे पानी के निकासी की सुविधा का अभाव दृष्टव्य है तथा खुले प्रवाह के कारण केवल आसपास का वातावरण दूषित नहीं होता, अपितु अंतःस्थलीय स्वच्छता भी दूषित होती है, जिससे पहाड़ी कोरवा समुदाय में विभिन्न प्रकार की बीमारी उत्पन्न होती है।

पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों के आवासीय दशा के प्रारंभिक चरण में इनकी अपनी प्रतिभा व जीवन प्रणाली के अनुसार विकास के अवसर को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए। लेकिन इनके विकास के लिए अन्य जनजाति के लिए बनाई योजना को नहीं अपनाया जा सकता। इसमें परिस्थितियों तथा मांगों के अनुरूप बदलाव का प्रावधान होना चाहिए। इनमें कोई भी कदम उठाने से पहले यह जरूरी है, कि इस बात का यथार्थपरक अध्ययन कर लिया जाए कि पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय किस हद तक आत्मसात कर पायेंगे साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी विकास कार्यक्रम को लागू करने के लिए यथासंभव इस समुदाय व क्षेत्र के स्थानीय लोगों की मदद ली जानी चाहिए। ऐसा करने से पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। परिणामतः आवासीय दशा में सुधार स्वाभाविक है।

पोषण समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ :

अध्ययन क्षेत्र में चावल उपयोग की प्रधानता है। पाट एवं पठारी क्षेत्र की अधिकता से धान के अलावा मक्का फसल का उत्पादन अधिक प्राप्त हुई, वहीं सड़क मार्ग एवं अन्य अधोसंरचना की कमी के कारण पोषक तत्वों से युक्त आहार उपयोग में कमी दृष्टव्य हुई। इससे स्पष्ट है, कि पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों की भौगोलिक पृष्टभूमि खाद्य उपलब्धता तथा पोषण स्तर को जहाँ प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, वहीं क्षेत्र में निवासरत् समुदाय की सामाजिक–आर्थिक विकास का प्रमुख बाधक कारक भी है। सभ्य समाज एवं संस्कृति से कोसों दूर हैं, जहाँ ये अपने प्राकृतिक वातावरण में आत्मीय संबंध के साथ निवासरत हैं। इस प्रकार इनके आहार पर भी प्रचीन परम्परा आदि का अत्यधिक प्रभाव दृष्टव्य है, वहीं उपभोग की गई वस्तुएं या पदार्थ स्तरहीन होने के साथ–साथ इनमें आवश्यक पोषक–तत्व की मात्रा न्यून होती है, अर्थात् वे जीवित रहने के लिए न्यूनतम् आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र है। समुदाय कभी–कभी भोज्य पदार्थ के अभाव में भूखे रहने को मजबूर हो जाते हैं।

सर्वेक्षित ग्रामों में कैलोरी का औसत उपभोग प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति 1757.30 है, जो अनुशंसित मात्रा से कम हैं, वहीं कैल्शियम एवं आयरन पोषक तत्वों का भी प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति औसत उपभोग अनुशंसित मात्रा से कम प्राप्त हुआ। प्रदेश के सर्वेक्षित ग्राम छिछली 'अ' (जशपुर जिला) में, अति निम्न पोषण स्तर सूचकांक प्राप्त हुआ। यहाँ सभी प्रकार की भौतिक सुविधाओं का अभाव पाया गया फलतः अधिकांश पहाड़ी कोरवा समुदाय पोषण संबंधी विभिन्न प्रकार के बीमारियों से ग्रसित हैं। पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति में से 35.57 प्रतिशत् समुदाय का वजन सामान्य से कम पाया जाना उनके निम्न पोषण स्तर की पुष्टि करता है। पहाड़ी कोरवा समुदाय की विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए अपेक्षित खास जरूरतों पर भी ध्यान देना अति आवश्यक है। यह जनजाति प्रदेश की उन विशेष पिछड़ी जनजातियों में से है, जो आर्थिक दृष्टि से भरण–पोषण से अधिक कुछ नहीं कर पाती। अतः पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों की पोषण स्थिति सुधारने के लिए बनाई जाने वाली प्रत्येक योजना में महत्वपूर्ण तथ्य पर ध्यान देना अपेक्षित है। अतः इनमें शिक्षण व प्रशिक्षण का विकास पूर्व प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग होगा। इससे इनमें जागरूकता आएगी जिससे विकास कार्यक्रम में सही साझेदारी निभा सकेंगे। साथ ही अन्य समुदाय के शोषण से भी मुक्ति पा सकेंगे।

स्वास्थ्य समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ :

स्वास्थ्य संबंधी समस्या पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों में अन्य जनजातियों की अपेक्षा अधिक दृष्टव्य हुई है। इसी संदर्भ में स्वास्थ्य केन्द्र के दूर होने के कारण आने–जाने की समस्या होती है। समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाना भी एक प्रमुख समस्या है। समुदाय के लोगों में आर्थिक पिछड़ापन एवं जागरूकता की कमी के कारण स्वास्थ्य लाभ लेने संबंधी समस्या का सामना करना पड़ता है। पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति परिवारों में शिक्षा की कमी के साथ शासन द्वारा क्रियान्वयन न होना अदिम जनजाति परिवार के सामाजिक–आर्थिक विकास में बाधक कारक रहे हैं। अस्तु पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की सामाजिक–आर्थिक दशा संबंधी समस्याओं के निराकरण के लिए आहार उपलब्धता एवं आर्थिक स्थिति समृद्ध करने में कारगार उपाय सिद्ध होंगे। इसके अलावा शासन द्वारा स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं को कृषकों तक प्रसारित करने के लिए शिविर लगाए जाएं तथा स्वास्थ्य परीक्षण भी समय–समय में पंचायत स्तर पर किया जाना आदिम जनजातीय कृषकों के स्वास्थ्य स्तर के उन्नयन हेतु महत्वपूर्ण होंगे साथ ही हर्बल दवा बनाने के लिए शासन स्तर पर स्थानीय पहाड़ी कोरवा समुदाय को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए ताकि रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष :

पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, आवासीय, पोषण एवं स्वास्थ्य दशाएँ निम्न है जिसके लिए उनका निम्न शैक्षणिक स्तर प्रमुख उत्तरदायी कारक है। भूमिहीन, सीमांत व लघु कृषक परिवार की अधिक आर्थिक सहभागिता, उनके निम्न सामाजिक, आर्थिक, आवासीय, पोषण एवं स्वास्थ्य स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिक निभाते हैं, वहीं आज भी पहाड़ी कोरवा परिवार बीमारी की स्थिति में घरेलू जड़ी–बूटी तथा झाड़फूक के द्वारा रोगोपचार करते हैं जो अंधविश्वास एवं रूढ़ीवादी विचारधारा को प्रदर्शित करता है।

आदिम जनजाति में जीवन स्तर निम्न है, जिसका मुख्य कारण सामाजिक–आर्थिक संरचना है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि एवं शिकार करना है। कृषि का स्वरूप झूमिंग एवं परम्परागत् रूप से किया जाता है। उच्च पर्वतीय, पाट एवं पठारी क्षेत्र में निवास करने के कारण वनस्पत्तियों से सीधा संबंध होता है, फलस्वरूप अपनी सांस्कृति को बनाये रखने के लिए आधुनिकता को ग्रहण करने से कतराते व ग्राम से पृथक पारा/टोलों, नदी–नालों व झरनों के समीपस्त छिट–पूट बिखरे अवस्था में पाये जाते हैं तथा समय के साथ–साथ स्थानांतरण करते रहते हैं। वर्तमान में शासन द्वारा वनों की कटाई पर रोक लगने के कारण पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति समुदाय स्थायी कृषि की ओर अग्रसर होने लगे हैं साथ ही पड़ोसी जातियों के सम्पर्क में आने से जागरूक होने लगे हैं फलस्वरूप इनके जीवन शैली में परिवर्तन दृष्टव्य है।

संदर्भ सूची :

Basu, S. (2000) : Dimensions of tribal health in India, *Health and Population Perspectives and Issues*, 23(2), pp. 61-70.

Chopra, K. and Neelam, M. (2004) : Common Helth Problems encountered by the tribal Community in Bastar district, Helth Popul Perspect Issues, 27(1), pp. 40-48.

Mishra, R.N. , 2002, *Tribal life and Habital (Economy and society)*, Rita Publications, Jaipur.

Patel, M. L. (1974) : Changing land problems of tribal India. *Changing land problems of tribal India.*

Sahu, K. (2014) : Challenging Issues Of Tribal Education in India. *IOSR Journal Of Economics and Finance (IOSR-JEF).* Vol.3, Issue 2 Ver. Mar-Apr.

आहूजा, राम (2002): सामाजिक समस्याएँ, द्वितीय संस्करण, रावत पब्लिकेशन जयपुर एवं नई दिल्ली।

किराड़, तेजसिंह एवं ममता किराड (1997) : ''पश्चिमी मध्यप्रदेश की जनजातियों की प्रमुख समस्याएँ एवं समाधान : एक अध्ययन'' *वन्यजाति,* नई दिल्ली, अंक–47, संख्या–1, जन.,1997, पृ.सं. 7–17.

जनोलिया, प्रमोद कुमार (2011) : ''जनजातीय परिवार में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी एवं समस्याएँ : झाबुआ जिले के भील जनजातीय महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में'' *आदिवासी स्वास्थ्य पत्रिका,* जबलपुर, अंक–6 संख्या–1 एवं 2, जन.–जुलाई, पृ.सं.69–76।

प्रताप, बिरेन्द्र एवं सिंह, जगदीश (2012): स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं के उपयोग पर सामाजिक–आर्थिक दशाओं का प्रभाव: जनपद चंदौली (उ.प्र.) का एक प्रतीक अध्ययन, राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, वर्ष–3 अंक 2, पृष्ठ 29–40।

राय, अजय कुमार (2009) : ''पातालकोट घाटी (जिला–छिन्दवाड़ा) की भरिया जनजाति में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन'' *शोध समीक्षा और मूल्यांकन,* जयपुर, अंक 2, संख्या 7, अगस्त, पृ.सं. 379–381।

सिंह, जितेन्द्र (2013) : ''सोनभद्र (उ.प्र.) की आदिम जनजातियों का भौगोलिक अध्ययन'' *उत्तर भारत भूगोल पत्रिका,* गोरखपुर, अंक–43,संख्या–4, दिसम्बर, पृ.सं. 53–60।

सिंह, प्रदीप एवं अन्य (2010) : ''गुजरात एवं राजस्थान की जनजातियों की मुख्य सामाजिक–आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय विशिष्टताएँ : एक तुलनात्मक विश्लेषण''*आदिवासी स्वास्थ्य पत्रिका,* जबलपुर, अंक–16, संख्या– 1 एवं 2, जून.–जुलाई, पृ. सं.47–51।

श्रीवास्तव, प्रभाशंकर एवं सुनेजा, दीप्ति (2013): कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों में स्वास्थ्य दशाएँ एवं उपचार के प्रति दृष्टिकोण, उत्तर प्रदेश भौगोलिक पत्रिका, अंक–18, पृष्ठ 113–119।

IJCRT